International Journal of Professional Development
Vol.9, No.1, Jan-June. 2020 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor 2.892 (IFSIJ)

महात्मा गांधी और ग्राम उद्योग:एक अध्ययन

ओजेश कुमार
E-mail: Ojesh Kumar2055@gmail.com
Ph. No. 8930648548

सारांश
आज जब समाज भौतिकवादी संस्कृति औद्योगिकरण के दौर से गुजर रहा है तो हम पाते हैं कि, निष्पक्ष व्यापार, नैतिक व्यापार एवं सामाजिक उद्यमिता की भावना को विकसित किया जाए, आज का व्यक्ति स्वार्थ लोलुप हो अनुचित व्यापार, को व्यवहार में ला रहा है इसे रोकने के लिए किसी कानून की नहीं बल्कि वैचारिक परिवर्तन की जरूरत है। वैचारिक परिवर्तन किसी एक बदलाव का परिणाम नहीं बल्कि कई व्यक्तियों के सही दृष्टिकोण, सही आचरण एवं कर्म प्रतिबद्धता का परिणाम होगा और इस वैचारिक परिवर्तन को लाने के पीछे भी दूरदर्शिता विचारों की सुस्पष्टता एवं अधिकारिक नेतृत्व की आवश्यकता होती है तभी श्रम के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाला एक सिद्धांत समाज के समक्ष दृष्टिगोचर होगा। समाज के बड़े वर्ग को दिशा देने का कार्य यदि सुव्यवस्थित रूप से किया जाए तो आज भी भारतवर्ष में खेती के बाद द्वितीय सबसे बड़ी रोजगार देने वाली कोई इकाई है तो वह है हथकरघा जो हमारे देश के ग्रामीणों को रोजगार प्रदान करने में सहायक तो है ही साथ ही शारीरिक श्रम के कारण स्वास्थकार भी होती है।अर्थ, जो मुक्ति दे वही सच्ची विद्या है, भारतवर्ष सदैव ग्रामों का देश माना जाता है और उद्योग आधारित शिक्षा गांधी जी का प्रिय विषय थी। 1904 में एक शाम जब गांधी जी जोहान्सवर्ग से डर्बन की रेलगाड़ी पकड़ रहे थे तब एक मित्र ने उन्हें रस्किन की पुस्तक "UNTO THIS LAST" (अन टू दिस लास्ट) भेट स्वरूप दी, उन्होंने रात भर जाग कर यह पुस्तक पढ़ी।श्रम का अधिकतम प्रभाव गांधीजी पर पड़ा, शिक्षा के सन्दर्भ में भी गांधीजी के विचार थे कि, किताब ज्ञान और उद्योग ज्ञान साथ-साथ मिलनी चाहिए, उनके अनुसार उद्योग प्रधान शिक्षा बालक के सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं नैतिक विकास के लिए आवश्यक है। ऐसे ज्ञानार्जन से बालक व्यक्तिगत रूप से स्वार्थी ना बनकर श्रम की महत्ता को समझेगा। वे इस पुस्तक से इतने प्रभावित हुए कि उसे अपने जीवन में उतारने को आतुर हो गए। इस पुस्तक के अनमोल वचन-श्रम का जीवन अर्थात् खेत जोतने वाले और कल-कारखानों में काम करने वालों का जीवन श्रेष्ठ है।

विषय संकेत- गाँधी जी से स्वप्न के आधार पर ग्रामीण उद्योग की वर्तमान में प्रासंगिकता को समझना

महात्मा गांधी एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सहयोगी, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग एवं ग्रामीण जन को स्वावलम्बी बनाने के लिए खादी एवं ग्रामोद्योग, गाँधीजी के सिद्धांतों को अपनाते हुए, लागू कर रहा है जिसका फायदा, अंतिम छोर तक बैठा व्यक्ति उठ रहा है। वर्तमान दौर में भी गाँधीजी के विचार प्रासंगिक हैं, वे कहते थे, कठोरतम धातु की अपेक्षित ताप पाकर पिघल जाती है। इसी प्रकार, कठोरतम हृदय भी अहिंसा की अपेक्षित ताप से पिघल जाना चाहिए, और ताप पैदा करने की अहिंसा की क्षमता अपरिमित है। क्योंकि अहिंसा एक विज्ञान है। विज्ञान के शब्दकोश असफलता का कोई स्थान नहीं होता।

गाँधीजी की अहिंसा का अर्थ दुर्बलता या कायरता नहीं बल्कि अहिंसक को अपने पद में बने रहने के लिए अधिक आत्मबल की जरूरत होती है। मनसा, वाचा, कर्मणा से अहिंसा का मतलब है, अहिंसक, किसी का बुरा ना सोचे सहिष्णुता रखे और भौतिक सम्पदा इतनी न रखे कि निर्धन का शोषण ना हो। अहिंसा का पालन मानव को न केवल श्रेष्ठ आचरण की ओर बढ़ाता है बल्कि एक संपूर्ण व्यक्तित्व की ओर भी ले जाता है जहाँ उसके चरित्र की दृढ़ता उसके गुणों की शुद्धता उसके निर्दोष व्रत पातन के अनुज्ञा करते हैं और उसे हमेशा सदमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। सीमित आवश्यकताएँ, नैतिक व्यापार, स्वार्थ लोलुपता की कमी, दूसरे के प्रति सहयोगात्मक रवैया घोतक है। एक स्वस्थ समाज के विकसित प्रगतिशील विचार धारा के जिसमें समभावी, समपोषित, मानसिकता समाहित होती है।

ऐसे सिद्धांतों से गाँधीजी, एक स्वस्थ विचारधारा, अनुशासन एवं समप्रिय व्यक्ति के रूप में एक मानव को देखता चाहते थे। श्रमहीन व्यक्ति ना तो स्वयं का भला कर सकता है ना समाज का। और भारत को समृद्ध राष्ट्र के रूप में विकसित करने का अर्थ, भारत की मूलभूत इकाई गाँव को माना है, जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर हो, एवं अपनी समस्याओं का निराकरण भी स्थानीय स्तर पर कर सके। आज का विकास उपभोक्तावाद को बढ़ावा देता है, आम आदमी और छोटी इकाईयों को पराश्रित एवं कमजोर बनाता है और साथ ही सामाजिक मूल्यों में गिरावट भी लाता है। गाँधी जी के रामराज्य की परिकल्पना में, एक न्यायोचित शोषणमुक्त समानता और व्यक्ति स्वातंत्र समाज की कल्पना की थी। गाँधीजी ने राष्ट्र को संगठित किया, और उनके संगठन में परिवारवाद की भावना थी।

महात्मा गांधी एवं आत्मनिर्भर भारत

गाँधीजी ने जो सिद्धांत प्रतिपादित किए जो मूलभूत सौन्दर्य थे, भौतिकवादी नहीं थी, तिकवादी सिद्धांतों की बात हम करें तो वह प्रतिस्पर्धा और स्वार्थपरायणता को बढ़ावा देते है, जबकि गाँधीजी के सिद्धांतों के अनुसार शोषण रहित व्यवस्था, समता पर आधारित वर्गविहित समाज, कर्तव्यपरायण, आत्मविश्वासी, समाज सेवी, कुछ मिलाकर एक व्यक्ति के पास हो- आत्मवलम्बी स्वस्थ संयत व्यक्तित्व, यही उनका मूल वृक्ष है और अन्य सारे रचनात्मक कार्यक्रम उस वृक्ष के पत्ते रूप में ही दृष्टिगोचर है। व्यवस्था की बात करे तो गाँधीजी की विकास की अवधारणा के विरुद्ध थे, जिसका लक्ष्य भौतिक इच्छाओं की वृद्धि और उनकी पूर्ति के उपाय ढूंढना है, विकास की इसी भौतिकवादी अवधारणा में उपनिवेशवाद को जन्म दिया और इसी के परिणाम आज राष्ट्र भुगत रहा है।

भूमंडलीकरण, सामाज्यवाद के नए अवतार के रूप में ही परिलक्षित है, तकनीक गुलामी का वृहद रूप ही आज विकराल रूप में हमारे समक्ष कई समस्याओं को लेकर खड़ा है। भूमंडलीकरण के दौर में भी गाँधीजी के स्वदेशी विचार ही सर्वाधिक उपयुक्त और प्रासंगिक है। गाँधीजी ने अपनी अर्थव्यवस्था को सृदृढ़ करने के उद्देश्य से ही स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया था। उनका मानना था कि, किसी भी देश का विकास उनकी अपनी संस्कृति और मूल्य परम्परा के अनुरूप ही हो सकता है। दूसरी संस्कृतियों के नकल से नहीं, भारतीय जीवन शैली एवं चिंतन में गाँधी के महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गाँधी जी मानते थे महिलाओं की व्यक्तिगत शक्ति बजाय उनके नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति में गाँधीजी की अपार आस्था रही है। गाँधीजी स्त्रियों एक ऐसी भौतिक शक्ति के रूप में देखना चाहते है, जिनके पास अपार नारीवादी साहस। चरखे के माध्यम से, महिलाओं को सम्मानपूर्वक रोजगार दिलाना भी उनका एक सफल प्रयोग रहा है। ग्रामीण विकास की

ijpd.Vol.9,No.1, Jan-June 2020

प्रक्रिया में, परिभाषात्मक और गुणात्मक अभिवृद्धि के लक्ष्य को लेकर उनके उद्देश्य इस प्रकार है:

- अधिक उत्पादन एवं अधिक रोजगार का सृजन, जिससे ग्रामीण गरीब वर्ग केलोंगों को मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो सके।
- आधुनिक निवेशों एवं सेवाओं की प्रचुर मात्रा में प्राप्ति तथा उनकी समाज के सभी वर्गों को समान सुलभता।
- आय का समान वितरण एवं समाज के विभिन्न वर्गों के विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना।
- जन-कल्याण एवं रहन-सहन के स्तर में वसुधार।
- कगरीब जनों में विकास कार्यक्रमों एवं क्रियान्वयन में सक्रिय सहभागिता की भावना जागृत करना।
- स्वप्रेरित एवं स्वावलम्बी विकास को सुनिश्चित करना।
- पर्यावरणीय जागृति उत्पन्न करना एवं जीवन में गुणात्मक सुधार करना।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण घटक ग्रामीण विकास को गाँधीवादी विचारधारा से पूर्णतः सहमत पाया जाता हैं क्योंकि भारत में ग्रामीण और कृषि और समबद्ध गतिविधियों को अधिकतम उत्पादन के रूप में देखा गया। सैद्धांतिक रूप से, हम गाँधीवादी मूल्यों/सिद्धांतों को आदर्शवादी मान सकते हैं क्योंकि यह नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च महत्व देते हुए व्यक्ति को स्वस्थ प्रतिपर्धा एवं संपूर्ण व्यक्तित्व को तैयार करता है। प्रगति तो किसी भी तरीके से प्राप्त की जा सकती है किन्तु किसी मानव का रास्ता काटकर या उसका दिल दुखाकर प्राप्त की गई प्रगति से कोई भी खुश नहीं रह सकता इसलिए मानवतावादी सिद्धांतों पर चलकर प्राप्त की गई सफलता अधिक विश्वसनीय और सभी को सुख प्रदाता कहलाती है और सर्वे भवन्तु सुखिनः के तर्ज पर सभी को सुख पहुँचाने वाली एवं कल्याणकारी होती है।

आज का समय अत्यन्त तेजी से सफलता प्राप्त करने का दौर है तब भी मानव भौतिकवादी होकर भी संतोष की तलाश में पुनः अध्यात्म की ओर मुड़ता है और भारतीय दर्शन आज भी पूरे विश्व में अग्रणी है तो ऐसे सिद्धांतों पर चलकर सामाजिक उद्यमिता की भावना को प्रोषित करते हुए यदि समाज एक-दूसरे की प्रगति में सहभागी बने तो यह पृथ्वी स्वर्ग के सदृश स्वमेव दृष्टव्य होगी।

वर्तमान समय में मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु बना गय है, मानव समाज आज टुकड़ों में विभक्त हो गया। इस स्थिति में मानव को घृणा, ईष्या, द्वष, कलह और आपसी प्रतिद्ववद्विता के सिवाय कुछ हासिल नहीं होता, सम्प्रति मानव दुखी है, क्योंकि वह अपनी संस्कृति को त्यागकर, पाश्चात्य देशों की भौतिकवादी पथ पर चलकर लिप्सावादी प्रवृद्धि में उलझता जा रहा है। इसी प्रवृति के चलते मशीन बन वह अपना समय व्यतीत कर रहा है। भारतीय दर्शन में भी मानवतावादी अवधारणा है:

वेदो धर्म भूलम्
वेदो खिलो धर्मभूतम्
धर्मसमयः प्रमाणं वेदाष्व।

अतः धर्म जीवन यात्रा के ऐसे नियमों का नाम है जिन पर चलने से व्यक्ति का जीवन सुखी और समाज सुव्यवस्थित रहता है। अनुशासन, और धर्म से नियंत्रित होकर धन कमाने से यहाँ कोई दुःखी नहीं होता और परलोक में सद्गति प्राप्त होती है। धर्म हमेशा सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है धर्म के वशीभूत हो व्यक्ति सत्य के मार्ग को अपनाता है एवं धर्मानुकूल आचरण को धारण करता हुआ अपने जीवन शैली को व्यवस्थित करता है धर्ममार्गीय होने का अर्थ धर्मभीरुता नहीं है बल्कि श्रेष्ठ सिद्धांतों के मार्ग को अपने जीवन में अपनाते हुए गतिमान रहना है जिससे सभी जीवों का कल्याण निहित है एवं धर्म ही हमें कर्मशील होने की प्रेरणा होता है।

इन्हीं दर्शन का प्रभाव हमें महात्मा गाँधी के सिद्धांतों में देखने को मिलता है और ऐसे ही निष्पक्ष, नैतिक व्यापार के समर्थक, गाँधी जी ने ग्राम की परिकल्पना की थी और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्तरपर जनोपयोगी उद्योगी को ही स्थापित करने की वकालत की थी। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गाँधी जी का मूलमंत्र सभी को भोजन, वस्त्र, निवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की बुनियादी आवश्यकतायें पूरी हो, च्यगाँव भी अपना, काम भी अपनाज् का सिद्धांत भी इसी की पुष्टि करता है। ग्राम स्वराज्य का अर्थ- च्ग्राम से एक स्वावलम्बी इकाई का निर्माण। और यही इकाईयाँ समृद्ध भारत की अर्थव्यवस्था में निर्धारक साबित होगी।च्् इन इकाईयों के संरक्षण एवं संर्वधन पर हम सभी को मिलकर पर्याप्त ध्यान दिया जाना आवश्यक है तभी ये पल्लवित एवं पोषित होगी।

जैसी कृषि क्षेत्र में हमारी भागीदारी कम होती जा रही है, कृषि आधारित पसंस्करण केंद्रो/उद्योगों को बढ़ावा देना हमारी पहली प्राथमिकता होना चाहिए। भारत के दूसरे बढ़े रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र है, 'हथकरघा' जो शारीरिक श्रम संपूर्ण विकास एवं स्वस्थ जीवन के ताने-बाने का प्रतीक है, उसमें अभिवृद्धि के प्रयास किए जाने चाहिए। गाँधी का विकास गाँव की तर्ज पर हो ना कि शहरों की तरह, ग्रामीण विकास और अर्थव्यवस्था की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए कार्य जमीनी स्तर पर संपादित हो तो परिणाम अवश्य संतोषजनक होंगे।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध आलेख के द्वारा कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी की के सपनों का भारत एवं कर्तव्यनिष्ट संकल्प से ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए न केवल तत्कालीन समय में प्रासंगिक थी बल्कि भारत के लोगों में राष्ट्र प्रेम की भावना जगाने में भी सक्षम रही है और ग्रामीण कुटीर उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में अपनी अहम भूमिका निभाते थे और सवलम्बी आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए स्वदेश प्रेम से जागृत थे। वर्तमान समय में भी उनके सिद्धांत प्रासंगित है तभी तो खादी एक विचार बनकर उभरा है और एक पूरा विभाग खादी और ग्रामोद्योग आयोग के नाम से रोजगार प्रदान करने की दिशा में सतत् कार्यरत है और उनके विकास के लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था और रोजगार वृद्धि की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. बापू जीवन और दर्शन, पृष्ठ २८८, संपादक- डॉ. रोमिला चावला, प्रथम संस्करण २००९, प्रकाशन- पूनम गोयल, राज पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली
2. गाँधी शिक्षा दर्शन, पृष्ठ २०, लेखक- पवन कुमार, प्रथम संस्करण - २०११, प्रकाशन- मोनाक्षी प्रकाशन, शकरपुर दिल्ली
3. महात्मा गाँधी के विचार, पृष्ठ ११०, संपादक- के.सी. पंत, रायम संस्करण २०१२, प्रकाशन- नवभारत साहित्य, यमुना विहार, दिल्ली
4. गाँधी अध्ययन, पृष्ठ १२१, संपादक- मनोज सिन्हा, दसरा संस्करण- २०१०, प्रकाशन- ओरियंट ब्लैक स्वान, प्रा. लिमिटेड आसफ अली रोड, नई दिल्ली

ijpd,vol.9,No.1, Jan-June 2020

5. गाँधी-विचार और हम, पृष्ठ ६८, पी.के. अग्रवाल, शिप्रा अग्रवाल, संस्करण २०१२,प्रकाशक- प्रतिभा प्रतिष्ठान नेता सुभाष, नई दिल्ली, आईएसबीएन ८१-८८२६६-८८-४

6. भारतीय दर्शन में मानवतावादी अवधारणा, पृष्ठ २४-२५,संपादक- डॉ. देवकुमार यादव, संस्करण-प्रथम, वर्ष २००९, प्रकाशन-राका प्रकाशन,

ijpd,Vol.9,No.1, Jan-June 2020